20.05.2020

Dr. Purnima Singh
Department of political Science
Indian political thought
B.A part. 1 Paper. 1st
Topic - M.N Roy - 2
Lecture - 48

M.N Roy - 2

नव मानववाद

मानवेन्द्रनाथ रॉय ने प्राचीन मानववाद में अनेक कमियाँ पाई। उन्हें प्राचीन मानववाद की धर्म प्रधानता स्वीकार नहीं थी। उनका विचार था कि मानववाद के साथ धर्म का मिश्रण किसी भी समय मानववाद को नष्ट कर सकता है। मनुष्य की सत्ता से ऊपर रॉय अन्य किसी भी प्रकार की आधिदैविक अथवा आधिभौतिक सत्ता को मानने के लिए तैयार नहीं थे। अतः रॉय ने मानववाद की प्राचीन मान्यताओं को समाप्त कर एक नवीन दृष्टिकोण अपनाया। यह नवीन धारणा न तो एक रहस्य थी और न केवल भाव विश्वास की वस्तु। नव मानववाद मानव के प्रादुर्भाव, उसके अतीत तथा उसकी वास्तविकता की खोज के साथ जीवन के मूलभूत अनुभवों पर आधारित किया गया। जीवशास्त्रीय प्रयोगों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि विवेक तथा नैतिकता मनुष्य को जन्मजात प्रकृति के परिणाम हैं। इसी जीवशास्त्रीय विशेषता के आधार पर वह अन्य मनुष्यों के साथ शान्ति व सहयोग का जीवन जीता है। रॉय के अनुसार नव मानववाद कोई अमूर्त दर्शन या केवल शुद्ध सामाजिक

दर्शन अथवा केवल मात्र राजनीतिक एवं आर्थिक सिद्धान्त ही नहीं है। इसके विपरीत यह उन सिद्धान्तों का संग्रह है जो मनुष्य जीवन के सभी क्रिया-कलापों को उसके सामाजिक अस्तित्व से सम्बन्धित कर उसकी अनुभूति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

इस प्रकार नव मानववाद मानव को स्वयं के भाग्य का निर्माता बनाता है तथा वह सुविधा प्रदान करता है जिसके अपनाने से मनुष्य अपने विश्व का निर्माण तथा पुनर्निर्माण करता हुआ सतत विकास की ओर प्रयत्नशील रह सकता है। मानव-अस्तित्व को स्वतन्त्र-पैदा करने वाले निरन्तर संघर्षों तथा अनुभवों से ही नव मानववाद उत्पन्न होता है, मानव की सामाजिक, राजनीतिक, बौद्धिक तथा नैतिक जीवन की समस्याओं ने मानव-भविष्य के सम्बन्ध में यह सोचने के लिए विवश किया है कि यदि मानव अपने लिए एक नवीन जीवन-दर्शन की सृष्टि नहीं करता तो वह अपने आप में विश्वास खो बैठेगा तथा सदा के लिए मार्गच्युत हो जायेगा। अतः सामाजिक ढाँचे का नव निर्माण एवं मानव-जीवन को सौहार्दपूर्ण एवं सुखमय बनाने के लिए मानव का पुनर्मूल्यांकन नव मानववाद का ध्येय है।

यदि निष्पक्ष दृष्टि से विचार किया जाये तो नवमानववाद कोई पूर्णतया नवीन विचारधारा नहीं ~~दिखाई~~ दिखलाई देती। यह वही पुरानी मानववादी विचारधारा है जिसको आधुनिक विज्ञान की गवेषणाओं का पुट देकर नवमानववाद के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। मानवेन्द्रनाथ का यह उदारवादी दृष्टिकोण

है कि उन्होंने नवमानववाद को कठोरता की परिधि में न रख कर उसे बदलती परिस्थितियों के अनुरूप विकसित होने वाला सिद्धान्त बताया है। रॉय ने स्वीकार किया है कि मानववाद मार्क्स के प्रभाव में से अछूता नहीं किन्तु साथ ही साथ उन्होंने यह भी तर्क प्रस्तुत किया है कि नव मानववाद मार्क्सवाद से अधिक वैज्ञानिक है। उनका कहना था कि जब मार्क्स ने अपने सिद्धान्तों का सृजन किया था उस समय वैज्ञानिक ज्ञान इतना विकसित नहीं था। इसके विपरीत वे अपने नवमानववाद को जीव शास्त्र तथा मनोविज्ञान के नवीनतम निष्कर्षों पर आधारित मानते हुए उसे मार्क्सवाद से भी अधिक प्रगतिशील मानते थे।

किन्तु नवमानववाद तथा मार्क्सवाद में पर्याप्त अन्तर है। नवमानववाद में व्यक्ति को प्रभुता न केवल समाज में ही नहीं अपितु अखिल ब्रह्माण्ड में मानी गयी है। समाज की रचना का आधार ही व्यक्ति को माना है। यदि व्यक्ति समाज के बिना अस्तित्व नहीं रखता तो समाज भी व्यक्तियों का ही बनाया गया संगठन है। अच्छे व्यक्ति मिलकर ही अच्छे समाज का निर्माण करते हैं। जब कि मार्क्सवाद एक अच्छे समाज की रचना को प्राथमिकता देता है ताकि उसके माध्यम से अच्छे मनुष्यों का निर्माण हो सके। पर रैंच रॉय के अनुसार अच्छे व्यक्ति का निर्माण अधिक महत्व रखता है। यह कहना कि पहले अच्छे समाज का निर्माण किया जाये तथा बाद में उसके माध्यम से अच्छे व्यक्ति बनाये जायें, उचित नहीं। यदि इस धारणा को माना जाये तो इसके अनुसार पहले शक्ति प्राप्त करनी होगी तथा साध्य की प्राप्ति में हर समाज उचित ठहराया जायेगा।

इससे अच्छाई का जीव हो जायेगा और बुरे साधनों से भी अच्छे समाज को संगठित करने का समर्थन किया जायेगा। रॉय के अनुसार यह सर्वथा अनुचित है। बुरे समाज अच्छे व्यक्ति का निर्माण नहीं कर सकते तथा बुरे व्यक्ति अच्छे समाज का सृजन नहीं कर सकते। इस प्रकार रॉय मानववाद के विवेकित साधन तथा साध्य की नैतिकता के औचित्य पर बल देते हुए दोनों के समन्वय को पक्षपाती है।

रॉय के नवमानववाद की स्थापना शिक्षित एवं प्रबुद्ध जनता के माध्यम से ही हो सकती है। यदि समाज का ऐसा नव-निर्माण नवमानववाद पर आधारित किया जाये तो वह एक अभूतपूर्व क्रान्ति का जनक होगा। यह एक ऐसी क्रान्ति होगी जिसमें मानव के नैतिक, बौद्धिक, मानसिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा अन्य पक्षों का समावेश होगा तथा वह मानव के दृष्टिकोण में आमूलभूत परिवर्तन ला देगी। यही उग्र मानववाद है। इसमें न तो राष्ट्रवाद की भावना का समावेश है और न रंगभेद का। इसका अभीष्ट लक्ष्य मानव है।

इस तरह रॉय ने एक ऐसा दर्शन प्रस्तुत किया है जिसमें मानव को स्वतन्त्र, प्रेमी, विवेकी तथा सृजनशील प्राणी के रूप में बताया गया है। रॉय की मान्यता है कि मानव की स्वतन्त्रता ही उसे बर्बरता से सभ्यता की ओर बढ़ाने में सहायक हुई है। मानव विवेकपूर्ण चिन्तन तथा ज्ञान के आधार पर ही अपने तथा बाह्य विश्व के अस्तित्व को समझ पाया है।